एकजुट होकर एक लक्ष्य की ओर अग्रसर आंध्र प्रदेश

हैदराबाद, आंध्र प्रदेश में २२ से २४ दिसम्बर की तारीखों में दक्षिणी प्रान्तों की जोनल कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें भागीदारी से पूर्व आंध्र प्रदेश ने जोनल कार्यशाला की अभीष्ट सफलता के लिए गहन मंथन किया तथा बेहतर सफलता के लिए मिशननिष्ठा एवं एकजुटता के बड़े उत्साहवर्धक संकल्प लिये।

चार जिलों का सम्मेलन

गुण्टूर जिले के कोटप्पकोण्डा, नरसाराव पेट में कृष्णा, गुण्टूर, प्रकाशम तथा नेल्लूर जिलों का विशाल कार्यकर्त्ता सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जोन प्रभारी

चार जिलों के सम्मेलन में मंचासीन (ऊपर की पंक्ति में) डॉ.तुम्मुरी, डॉ.बृजमोहन गौड़, श्री रामकृष्ण जी एवं श्री सुब्बाराव जी

डॉ. बृजमोहन गौड़ एवं क्षेत्रीय वरिष्ठ साधक डॉ. रामकृष्ण सहित २०८ प्रज्ञा मण्डलों के ३००० से अधिक परिजनों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

डॉ. रामकृष्ण ने अगस्त २००७ में शांतिकुंज में की गयी साधना की अनुभूति एवं गुरुसत्ता से मिली सूक्ष्म प्रेरणा व्यक्त की। इस क्रम में उन्होंने समर्पित शिष्य और नैष्ठिक स्वयंसेवक के रूप में शांतिकुंज के निर्देशों के अनुरूप आंध्र प्रदेश में संगठन के विस्तार का संकल्प लिया। इस अवसर पर उन्होंने केवल परम पूज्य गुरुदेव-परम वन्दनीया माताजी को ही गुरु मानने और उन्हीं को समर्पित जीवन जीने की प्रेरणा उपस्थित जनों को दी।

तीन दिवसीय सम्मेलन का संचालन डॉ. बृजमोहन गौड़ के अलावा शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री परमानन्द द्विवेदी, श्री उमेश शर्मा, श्रीमती प्रशांति शर्मा आदि ने किया। गायत्री महाविद्या, महाकाल के साथ साझेदारी, समयदान ही युगधर्म, सबसे समर्थ हमारी पावन गुरुसत्ता, युगतीर्थ-शांतिकुंज, महाकाल का घोंसला, पूज्यवर का साहित्य जैसे विषयों पर प्रभावशाली उद्‌बोधन हुए।

इस सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष तक प्रदेश के ३० हजार गाँवों में प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डलों की स्थापना और १४० नगरों में १० हजार रुपये के साहित्य वाले गायत्री ज्ञान मंदिर की स्थापना के संकल्प लिये गये। प्रत्येक गाँव में दीवार लेखन करने के संकल्प उभरे। नाराकोडुरु (गुण्टूर) के डॉ. तुम्मुरी शिवरामकृष्णन्, तथा वाडरेव, चिराला, जिला प्रकाशम ने अपनी शक्तिपीठों को शांतिकुंज को समर्पित कर दीं। नरसाराव पेट (गुण्टूर) के नैष्ठिक परिजन श्री विजय भास्कर रेड्डी को आग्रहपूर्वक पहली बार किसी मंच पर लाया गया। सबने मिलकर अपने प्रदेश को गायत्रीमय करने का संकल्प लिया। सभी उपस्थित जनों को अपने संगठन के प्रति निष्ठावान रहने के संकल्प दिलाये गये। डॉ. बृजमोहन गौड़ ने सभी मण्डल संचालकों का मंगल तिलक कर भावभरी विदाई दी।

सक्रियता का आदर्श

प्रांतीय जोनल कार्यशाला के प्रयाज क्रम में वारंगल जिले में २४ से २६ नवम्बर तक तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें वारंगल, करीमनगर एवं खम्मम जिले के ३०० कार्यकर्त्ताओं ने भाग लेकर श्रद्धा-सक्रियता का आदर्श उपस्थित किया। सम्मेलन में १०८ मण्डल गठित करने एवं १५०० पत्रिकाओं के सदस्य बनाने के संकल्प लिये गये। इसी सम्मेलन में पाँच लोगों ने पंच प्यारों की तरह मिशन को समर्पित रहने का व्रत लिया। जोन प्रभारी डॉ. बृजमोहन गौड़ ने गुरुसत्ता की ओर से उनका मंगल तिलक कर शुभाशीष प्रदान किया।

वारंगल के कार्यकर्त्ता सम्मेलन में त्वरित सक्रियता का शानदार आदर्श उपस्थित हुआ। कार्यकर्त्ताओं ने जोनल कार्यशाला से पहले ही जन-जागरण का एक विशाल प्रयोग करने का मानस व्यक्त किया। श्री मल्लिकार्जुन, श्रीमती दुर्गा सावित्री, श्रीमती विजयश्री, सर्वश्री रघुराम, अच्छैया, सदानंद, श्रीनिवास राव, दशरथ राम, योगेन्द्र आदि की टोलियाँ गठित हुईं। तत्काल ४ दिवसीय प्रशिक्षण की व्यवस्था बनी। इन टोलियों ने ६० गाँवों में देव स्थापनाएँ करायीं एवं ८ दिसम्बर को वारंगल में ५१ कुण्डीय यज्ञ कराने के निमित्त कलश स्थापनाएँ करायीं, गाँव-गाँव दीवार लेखन हुआ।

८ दिसम्बर को वारंगल में शानदार ५१ कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में २० हजार रुपये का युग साहित्य बिका। यज्ञ में विधायक डॉ दुग्याल श्रीनिवास राव चन्नुरु, श्रीमती सुवन, श्री वानवत कम्ली एमपीपी तुरूर आदि अनेक महानुभावों ने भाग लिया। कार्यक्रम में लगभग १००० लोगों ने दीक्षा ली और २२ लोगों ने उपनयन संस्कार कराये। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. श्रीनिवास राव, श्री राजलिंगम आदि ने किया।

वारंगल के कार्यकर्त्ता सम्मेलन में १०८ गाँवों में ५-५ कुण्डीय गायत्री यज्ञ एवं रजवन्दन समारोह आयोजित करने तथा १०८ कुण्डीय यज्ञ के साथ उसकी पूर्णाहुति करने के संकल्प लिये गये। ❍

जोनल कार्यशाला से उभरी ऊर्जा का त्वरित नियोजन

हैदराबाद में दिनांक २२, २३, २४ दिसंबर २००७ को सम्पन्न हुई कार्यशाला को शानदार सफलता मिली। वहाँ आंध्र प्रदेश ही नहीं, दक्षिण भारत के सभी प्रांतों में युगऋषि के मिशन को व्यापक विस्तार देने के लिए लोगों में जोरदार उत्साह उभरा। सैकड़ों लोगों ने पूर्णकालिक या अपना ७० प्रतिशत समय मिशन के कार्यों में लगाने के संकल्प लिए। दक्षिण जोन ने इस उत्साह के सुनियोजन की भी त्वरित योजना बनाई और क्रियान्वित की, जो इस प्रकार हैं।

सुदृढ़ हुआ संगठन

शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिध श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी और दक्षिण जोन के प्रभारी डॉ. बृजमोहन गौड़ जोनल कार्यशाला के तुरंत बाद दक्षिण के चारों प्रांतों में संगठनात्मक गोष्ठियाँ लेने पहुँचे और वहाँ मिशनरी सक्रियता के तंत्र को सुव्यवस्थित करते हुए आगामी मार्गदर्शन प्रदान किया। अनंतपुर (आंध्र प्रदेश), बंगलोर, मदुरई, तुतकुडी, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी तथा चेन्नई में ये गोष्ठियाँ आयोजित हुईं। शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने इस प्रवास में संगठन के अलावा सदाशयता पूर्वक सक्रिय देवात्माओं को अपने अभियान का परिचय देकर परस्पर सहयोग करने के लिए सहमत भी किया। इस क्रम में चिन्मय मिशन, सत्यसाईं भक्त, रामकृष्ण मिशन, भारत विकास परिषद् आदि संस्थाओं में कार्य कर रहे स्वयंसेवकों ने युग की माँग के अनुरूप

वसंत पर्व २००८ से आरंभ हो रहे एक वर्ष में दक्षिण भारत में १००८ विद्या विस्तार गायत्री महायज्ञ संपन्न हो रहे हैं। इसके अलावा १२४ स्थानों पर एक सप्ताह के कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित होंगे। इनके संचालन के लिए टोलियों के निर्माण के लिए दक्षिण के समर्पित कार्यकर्त्ताओं का एक मासीय युगशिल्पी शिविर शांतिकुंज में फरवरी माह में चल रहा है। इसमें १५० प्राणवान् परिजन भाग ले रहे हैं।

सत्प्रवृत्ति संवर्धन एवं गायत्री चेतना के विस्तार में पूरा-पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया।

अनंतपुर में श्री सुखराज राजपुरोहित के नेतृत्व में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। बेंगलोर की कार्यकर्ता गोष्ठी में लगभग १०० सॉफ्टवेअर इंजीनियरों ने भाग लिया। वहाँ गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण का संकल्प भी उभरा। मदुरई के सौराष्ट्र स्कूल में आयोजित गोष्ठी में बड़ी संख्या में लोगों ने वानप्रस्थ जीवन जीने के संकल्प लिए। रामेश्वरम् में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं विश्व हिंदू परिषद् के वरिष्ठ प्रतिनिधियों से चर्चा हुई। वहाँ रामसेतु की रक्षा तथा देव संस्कृति के विस्तार के लिए आवश्यक वातावरण बनाने संबंधी चर्चा हुई। श्री मधु जी एवं श्री मुरली जी के नेतृत्व में वहाँ एक भव्य २४ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के आयोजन तथा आसपास के सभी ब्लॉकों में योग प्रशिक्षण एवं कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन का निर्धारण हुआ।

जोनल कार्यशाला के बाद सभी प्रांतों में संगठन एवं ऊर्जा के सुनियोजन के त्वरित प्रयास आरंभ हो गये। आंध्र प्रदेश में श्री परमानंद द्विवेदी, कर्नाटक में श्री उत्तम गायकवाड़, तमिलनाडु में श्री जयराम मोटलानी, श्री विन्देश्वरी प्रसाद एवं श्री उमेश शर्मा तथा केरल में श्री पीयूष रस्तोगी के मार्गदर्शन में ये कार्य सम्पन्न हुए। ❍

गुवाहाटी में बन रहा है गायत्री चेतना केन्द्र

गुवाहाटी (असम)

गुवाहाटी के बिहार वाड़ी में २० दिसम्बर २००७ को गायत्री चेतना केन्द्र के निर्माण का शुभारंभ हुआ। यह केन्द्र पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में सप्त आन्दोलनों के विस्तार के लिए संकल्पित है तथा इनके क्रियान्वयन के लिए विशिष्ट योजनाएँ बनायी जा रही हैं। चेतना केन्द्र निर्माता गायत्री प्रज्ञा संस्थान, बेलतला ने अपने क्षेत्र के प्रति संवेदनशील जाग्रत् आत्माओं से केन्द्र के निर्माण एवं अभीष्ट उद्देश्य की सफलता के लिए उदार सहयोग करने का आवाहन किया। पता- गायत्री प्रज्ञा संस्थान, बेलतला (फोन- 2304844, 09954115482) ❍

संकल्प की जीत

बेलतला, कामरूप (असम)

श्रीमती सुनीता उपाध्याय न तो असमिया भाषा जानती थीं और न ही असमिया परिवारों से परिचित थीं। जनवरी २००७ में पूज्य गुरुदेव व वन्दनीया माताजी की प्रेरणा से मन में हूक उठी और उन्होंने २४ असमिया मूल के परिवारों को गायत्री उपासक बनाने का संकल्प ले लिया। संकल्प लेना सहज था, लेकिन उसे पूरा करना सरल नहीं था। उन्हें निराशा और असफलता की न जाने कितनी चुनौतियों से जूझना पड़ा, वहीं पूज्यवर की प्रेरणा और आशीर्वाद की अलौकिक अनुभूतियों का विलक्षण आनंद भी मिलता रहा। तमाम विषमताओं के बावजूद एकाकी प्रयास से उन्होंने असमिया अखण्ड ज्योति के ३५ सदस्य एवं हिन्दी अखण्ड ज्योति के २४ सदस्य बना लिए। कुल १९ घरों में देवस्थापना करायी। वे असमिया परिवारों के बीच कौशल्या महिला मण्डल चलाती हैं; यज्ञ, दीपयज्ञ संस्कार कराती हैं। उन्होंने महर्षि विद्या मंदिर-४ में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आयोजित की, जिसकी छात्रा कुमारी कोमल सिंह पूर्वोत्तर प्रांतों में प्रथम रही। ❍

विदेश समाचार

मॉरिशस में यूथ कैम्प की तैयारियाँ

सारे विश्व में गायत्री चेतना के हो रहे विस्तार के अनुरूप मॉरिशस की तरुणाई भी महाकाल की प्रेरणा पाने तथा अपने दायित्वों का पालन करने के लिए बड़ी बेसबरी से प्रतीक्षा कर रही है। उन्हें प्रतीक्षा है-आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी सहित शांतिकुंज प्रतिनिधियों के सान्निध्य में एक प्रभावशाली यूथ कैम्प के आयोजन की, जो मॉरिशस की तरुणाई को अध्यात्म की ओर प्रेरित करे। २० दिसम्बर को मॉरिशस पहुँचे शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री प्रताप शास्त्री, श्री गणेश पंवार, श्री मनीष साहू की टोली अपने कार्यक्रमों में इसी अकुलाहट की अनुभूति कर रही है।

२१ दिसम्बर को ले ओशे स्थित वैदिक योग सेण्टर की संचालिका रेकी मास्टर कु० पूर्णिमा के साथ शांतिकुंज प्रतिनिधियों की चर्चा हुई। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की अवधारणा ने बहुत प्रभावित किया। परिणाम स्वरूप अगले दिन उन्होंने अपने योग सेण्टर में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया। युगऋषि की समाजोत्कर्ष की योजनाओं में पूरे तन, मन, धन से सहयोग करने की बात उन्होंने कही तथा यूथ कैम्प के आयोजन पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की।

२३ दिसम्बर को श्री चन्द्रदत्त शम्भू ने अपनी स्वर्गीय पत्नी को श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिए गायत्री यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ में एमएलए श्रीमती कल्याणी जगू सहित बड़ी संख्या में उनके नाते-रिश्तेदार उपस्थित थे। माननीया कल्याणी जी ने एक नैष्ठिक स्वयं सेवक की तरह विचार क्रांति अभियान के विस्तार और यूथकैम्प के आयोजन के प्रति उत्साह व्यक्त किया।

मॉरिशस का गायत्री परिवार शांतिकुंज प्रतिनिधियों के इस त्रैमासिक प्रवास को यूथ कैम्प की पूर्व तैयारियों के रूप में ही देख रहा है और विविध कार्यक्रमों से जन उत्साह बढ़ा रहा है। इस क्रम में क्लू लाइब्रेरी में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। २४ दिसम्बर को श्री अनिल शाम के घर 'श्रम-दिवस' मनाते हुए सभी कार्यकर्त्ताओं ने सफाई अभियान चलाया। वाले दे प्रेत में श्रीमती रामदीन के घर भजन संध्या हुई। लोंग माउण्टेन के श्री दामोदर जी का ५८वाँ जन्म दिवस मनाया गया।

३० दिसम्बर को श्री अनिल शाम के घर एक महत्त्वपूर्ण सभा हुई, जिसमें मॉरिशस के ४० प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। सभी ने संगठित होकर विद्या विस्तार एवं गायत्री चेतना विस्तार की कार्य योजना बनायी।

नववर्ष के प्रथम दिन पाँच स्थानों पर गायत्री यज्ञों का आयोजन हुआ।

५ जनवरी को 'हम सर्विस ट्रस्ट' के सहायक सचिव श्री विजय दसोई से वार्त्ता हुई और यूथ कैम्प की कार्ययोजना पर चर्चा हुई। त्रीओल स्थित स्वामी पूर्णनन्द महाराज के आश्रम में जब यूथ कैम्प की चर्चा हुई, तो उन्होंने न केवल इसे पूरा समर्थन देने की बात कही, बल्कि उन्होंने अपने आश्रम में १०८ कुण्डीय गायत्री यज्ञ आयोजन करने का आग्रह भी किया। स्वामी जी ने ५ अतिथि कक्ष, मंदिर, बड़े हॉल तथा अन्यान्य सुविधाओं वाले अपने आश्रम को गायत्री परिवार को देने के लिए तत्पर दिखाई। वे शांतिकुंज के साथ मिलकर भारतीय संस्कृति के उत्थान के लिए कार्य करने के लिए उत्साहित हैं। ❍

अपने जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग, यही भाग्योदय का सर्वोत्तम विधान है।